Gyanshauryam, International Scientific Refereed Research Journal
© 2019 GISRRJ | Volume 2 | Issue 4 | ISSN : 2582-0095

गाँधी एवम् अहिंसा : एक अध्ययन

डॉ0 सुजीत कुमार तिवारी
एम.ए., पीएच.डी. (राजनीति विज्ञान)
बी.आर.ए. बिहार विश्वविद्यालय, मुजफ्फरपुर (बिहार)

महात्मा गाँधी ने भारतीय संस्कृति का विविध दिशाओं से इतना अधिक प्रभावित किया कि उनके समस्त अवदानों का मूल्यांकन कठिन है। खान–पान, रहन–सहन, भाषा–शैली, परिधान, परिवेश, सामाजिक आचार–व्यवहार, धर्म–कर्म, राष्ट्रीयता और अन्तर्राष्ट्रीयता भारत में जो भी आचार और विचार प्रचलित हैं या जिन्होंने भारतीय जनमानस को प्रभावित किया है उनमें प्रत्येक पर कहीं न कहीं गाँधी के व्यक्तित्व और कृतित्व की स्पष्ट झलक दिखती है। यहाँ तक कि गाँधी के आलोचकों एवं विरोधियों में भी उनके प्रभाव मौजूद हैं। वर्त्तमान भारत गाँधी का भारत है और गाँधी नाम आज के भारत का पर्याय है। गाँधी का अवतरण, तत्कालीन ब्रिटिश साम्राज्याधीन भारत को विभिन्न समस्याओं के निराकरण तथा सांस्कृतिक नवोत्थान के लिए हुआ।

महापुरूषो के संकेतों पर इतिहास हमेशा अपना स्वरूप बदलता रहा हैं प्रत्येक महापुरूष तत्कालीन समय की उपज होते हैं तथा काल के पटल पर जितनी अनुभूतियाँ एकत्र होती हैं उन्हीं की अभिव्यक्ति इनके माध्यम से होती है। भले ही वे कवि, कथाकार, सुधारक, सन्त, दार्शनिक, राजनीतिज्ञ अथवा अर्थ विशेषज्ञ एवं वैज्ञानिक ही क्यों न हों। यहाँ उदाहरण स्वरूप दर्शाया जा सकता है जैसे राजा राम मोहन राय, केशव चन्द्र सेन, स्वामी दयानन्द सरस्वती, रामकृष्ण परम हंस, स्वामी विवेकानन्द, अरविन्द, एनीबसेन्ट आदि तत्कालीन समय की उपज थे तथा उनके भी राजनैतिक नेता के रूप में गाँधी उभरे।

हमारे सभी नेता एवं सुधारक यूरोपीय सभ्यता की दुर्बलताओं अर्थात् उनकी धन लोलुपता एवं विलासिता के लिए राष्ट्रों के आर्थिक शोषण किये जाने से पूर्ण परिचित होते गयें उस समय भारत में सांस्कृतिक राष्ट्रीयता उत्तरोत्तर बढ़ रही थी । उसी ने राजनैतिक, राष्ट्रीयता को जन्म दिया। लगता है कि गाँधी जी के जन्म और विकास को सम्भव बनाने के लिए ही राजा राममोहन राय ने सांस्कृतिक जागरण का श्री गणेश किया था जिन्हें हम भारतीय सांस्कृतिक पुनर्जागरण का अग्रदूत

भी कहते हैं लगभग 100 वर्षों तक इस आध्यात्मिक देश ने जो आत्म मंथन किया तथा पराधीनता की ग्लानि को धोने के लिए अपनी श्रेष्ठ शक्तियों का चिंतन एवं ध्यान किया गाँधी जी उसी तपस्या के वरदान बन प्रकट हुए। नवोत्थान को व्याकुल एवं प्रेरित भारत अपनी स्वतंत्रता की तलाश कर रहा था साथ ही विश्व जनित समस्याओं का समाधन भी। गाँधी ने दोनों कामनाएँ पूरी की।

गाँधी भारतीय स्वतंत्रता संग्राम के महानायक थे। महानायक वह होता है जिसके इशारे पर काल अपनी दिशा बदलता है। गाँधी ने भी इशारे किये और सदियों की गुलामी में झुकी भारतीयता की रीढ़ सीधी हो गई, राष्ट्र का स्वाभिमान जाग उठा। देश ने अपनी अस्मिता पहचानी और जनता ने अपना वजूद। जैसा कि राष्ट्रकवि दिनकर ने लिखा है ''आज का भारत गाँधी का भारत है और गाँधी का नाम आज के भारत का पर्याय है। ऐसा इसलिए कि गाँधी ने चिन्तन–व्यवहार, भाषा–परिधान, धर्म–राजनीति तथा मूल्य शैली आदि अनेक पहलुओं से भारत की सभ्यता और संस्कृति पर व्यापक प्रभाव डाला। किन्तु गाँधी केवल भारत के नहीं थे बल्कि पूरी दुनिया और सारी मानवता के लिए थे।

भारतीय संस्कृति में रसी बसी थी। इसे हम भारतीय चिन्तनधारा की एक महत्वपूर्ण अवधारणा और भारतीय जीवन शैली का एक विशिष्ट मूल्य कह सकते हैं। वह जीवन की एकता का सिद्धान्त है तथा सत्य ही इस भावना की स्वीकृति है कि ''जो जीवन एक प्राणी के अन्दर भी मौजूद है वही जीवन दूसरे प्राणी के अन्दर भी मौजूद है। इसलिए किसी दूसरे प्राणी को कष्ट पहुँचाने की गहराई में स्वयं को दुःख पहुँचाना है जिससे बचने का एकमात्र उपाय अहिंसा है। दिनकर के अनुसार ''भारत में अहिंसा की परम्परा प्राग्वैदिक परम्परा थी और इसके बीज वेदों में भी थे। यद्यपि वेदों में बलि युक्त यज्ञों की प्रधानता है तथापि इन यज्ञों की निन्दा करने वाले ऋषि भी उस काल में मौजूद थे। इसलिए ब्राह्मण ग्रंथों में ''सर्वमेधे सर्वम् हन्यात्'' (सर्वमेघ–यज्ञ में सब कुछ मारा जा सकता है) के साथ–साथ 'मा हिंस्यात सर्वभूतानि' (किसी भी जीवन को मत मारो) की भी आज्ञा दी गई है। उपनिषद् काल में अहिंसा के विकास की जानकारी मिलती है किन्तु अधिकतर तपस्वी लोग इसका अनुपालन करते थे।

23वें तीर्थंकर पार्श्वनाथ ने अपने उपदेश में अहिंसा के साथ सत्य, अस्तेय और अपरिग्रह को जोड़ दिया। जिसके कारण तपस्वियों के जीवन से जुड़ अहिंसा आम लोगों के जीवन से जुड़ गई। बाद में जैनियों के 24 वें और अन्तिम तीर्थंकर महावीर ने अहिंसा को शीर्ष पर पहुँचा दिया। इसी काल में गौतम बुद्ध ने हिंसा मुक्त यज्ञ को श्रेष्ठ कहकर अहिंसा को और अधिक व्यापक बनाया।

यद्यपि गाँधी की सोंच पूर्णतः अध्यात्म पर आधारित थी किन्तु उनका कार्य क्षेत्र राजनीति रहा। राजनीति को उन्होंने स्वराष्ट्र धर्म के रूप में अपनाया इसलिए अहिंसा रूपी अस्त्र का सर्वाधिक

महत्वपूर्ण प्रयोग राजनीतिक क्षेत्र में किया। चाणक्य एवं मेकियावेली जैसे राजनीतिक चिंतकों के कारण राजनीति छल–क्षूद्र, झूठ, प्रपंच तथा लोभ–दंड आदि दुर्गुणों से युक्त हो गई थी। गाँधी ने अहिंसा के प्रयोग से उन खामियों को मुक्त करके सत्य, प्रेम, त्याग तथा करूणा आदि सद्गुणों पर आधारित किया। गाँधी के लिए राजनीति सिर्फ सत्ता सुख का साधन नहीं बल्कि मनुष्यता को बेहतर बनाने का मार्ग है। किन्तु यह तभी सफल होगा जब उसकी नींव सत्य और अहिंसा पर टिकी हो। गाँधी का विश्वास साध्य एवं साधन संबंध की पवित्रता पर आधारित किया। देश की आजादी गाँधी का पवित्र लक्ष्य था तथा उसे प्राप्त करने के लिए अहिंसा जैसे पवित्र माध्यम का प्रयोग किया। गाँधी का कहना था ''खून करके जो लोग राज करेंगे, वे प्रजा को सुखी नहीं बना सकेंगे।

गाँधी की अहिंसा सत्य एवं प्रेम से अलग नहीं है। इसलिए सत्य एवं अहिंसा एक दूसरे के पूरक तथा सिक्के के दो पहलु हैं और इस प्रकार आपस में बँधे हैं कि अलग कर पाना संभव नहीं। अहिंसा मात्र निषेधात्मक अमंगल हीनता नहीं बल्कि प्रेम की भावनात्मक प्रगति भी है, जो अमंगलकारी को भी मंगलकारी बना देता हैं। गाँधी के अनुसार अहिंसा कायरों की अहिंसा नहीं, जो भय के कारण उत्पन्न होती है, बल्कि शक्तिशाली और निर्भिक लोगों के गुण हैं जो व्यक्ति हिंसा का उत्तर हिंसा से दे सकता है, शक्ति का प्रतिकार शक्ति से कर सकता है परन्तु ऐसा नहीं करके इनका उत्तर प्रेम और करूणा से देता है, अहिंसा उसी के लिए है इसलिए गाँधी अहिंसा का जन्म प्रेम और करूणा से मानते हैं उसमें ंदुर्बलता और कायरता के लिए कोई स्थान नहीं है। साथ ही गाँधी के अनुसार यदि कायरता और हिंसा में किसी एक को चुनना हो तो हमेशा हिंसा को चुनना ही श्रेयस्कर होगा। हिंसा के आधार पर हुई क्रांतियाँ अन्ततः अपने उद्देश्यों के च्युत, होकर विफल हो गई। इस विफलता के कारणों को दर्शाते हुए समाजवादी चिन्तक सच्चिदानन्द सिंन्हा कहते हैं ''ऊँचे लक्ष्यों को प्राप्त करने के लिए भी जब हिंसा का रास्ता अपनाया जाता है तो हिंसा ही सर्वोपरि मूल्य बन जाती है और बाकि उद्देश्य वैसा ही विकृत रूप ग्रहण करते हैं जो अपने को हिंसा से उपजे माहौल के अनुरूप बन सकें। इस पृष्ठभूमि में यह समझना आसान है कि हिंसक क्रान्तियाँ क्यों पथ भ्रष्ट होती रही है।

जब हिंसा असमर्थ हो जाती है तब जो विकल्प बचता है वह अहिंसा का होता हैं दरअसल हिंसा का प्रयोग करने वाला अपने सिद्धान्तों को लेकर इतना शख्त हो जाता है कि वह बलपूर्वक दूसरों को इसे मानने के लिए बाध्य करता है, इसमें संवाद की संभावना समाप्त हो जाती है। फलतः सही–गलत, उचित–अनुचित का विमर्श नहीं हो पाता तथा अन्तिम विजय शक्ति की कुशलता से प्रयोग करने वाली की होती है, किन्हीं आदर्शो की नहीं। अतः हिंसा का निर्णय लेने से इस बात की जाँच करनी होगी कि इससे पैदा हुई स्थितियाँ अपने उन लक्ष्यों को प्राप्त कर पाती है या नहीं,

जिनके लिए हिंसा का चुनाव किया गया था। यदि नहीं तो फिर निर्णय को बदलना होगा तथा ऐसे विकल्प की तलाश करनी होगी जिसके द्वारा अभिष्ट लक्ष्यों की प्राप्ति हो सकें। अहिंसा ऐसा ही विकल्प है। आधुनिक युग में इसके सबसे बड़े प्रयोक्ता गाँधी हैं।

गाँधी की अहिंसा बहुआयामी है। वह समर्थ राष्ट्रों द्वारा असमर्थ राष्ट्रों पर किये गये सर्व आयामी आक्रमण का प्रतिकार कर सकती है। इस क्रम में उनका असहयोग आन्दोलन, सविनय अवज्ञा आन्दोलन, व्यक्तिगत सविनय अवज्ञा आन्दोलन, अनशन तथा सत्याग्रह आदि कार्यक्रम किसी भी राष्ट्र के हिंसक आक्रमण को विफल कर देने का सफल उपाय है।

यद्यपि दो विश्व युद्दों के बाद अब ऐसी स्थिति नहीं रही कि कोई हिटलर या मुसोलिनी पैदा हो जो सैनिक कार्रवाई के द्वारा सीधे–सीधे किसी भी कमजोर राष्ट्र पर आक्रमण कर उसे अपने अधीन कर ले तथापि अमेरिका द्वारा इराक पर किए गये आक्रमण तथा शक्तिशाली राष्ट्रों द्वारा सी.टी. बी.टी. पर हस्ताक्षर करने के लिए दबाव डालने जैसी घटनाएँ घटती रहती है जिनका विरोध गाँधी के द्वारा बताये गये अहिंसा के मार्ग पर चलकर किया जा सकता है। इन्हीं तरीकों से मध्यस्थता एवं शान्ति स्थापित करने के बहाने अपना अधिपत्य जमाने आने वाले विदेशियों से भी निपटा जा सकता है।

अतः स्पष्ट है कि गाँधी की अहिंसा बहुआयामी है। अतः वह किसी को निरंकुश राष्ट्र के किसी भी प्रकार के हमले से किसी साधनहीन राज्य की सम्प्रभुता को सुरक्षित रख सकने में समर्थ है। भारत की स्वतंत्रता से लेकर उसकी सम्प्रभुता को भी सुरक्षित रख सकने में समर्थ हो सका है। इसके द्वारा भारत की आजादी को लेकर जो प्रश्न उठाये जा रहे थे गाँधी ने उसे सिद्ध कर दिखाया।

अतः पद्धति के रूप में अहिंसा को चयन किये जाने के संबंध में गाँधी पर लिखे गये उपन्यास ''पहला गिरमिटिया के लेखक गिरिराज किशोर का कहना है कि'' यदि गाँधी विश्व प्रचलित युद्ध पद्धति को अपनाते तो उनकी निर्भरता दूसरे शक्तिशाली राष्ट्रों पर बढ़ जाती । गाँधी का एक 'गोस्पल' आत्मनिर्भरता भी था। सामाजिक और आर्थिक क्षेत्र में तो था ही, उन्होंने आत्म निर्भरता को भी अपने इस संघर्ष का अविभाज्य अंग बना लिया था। गाँधी अहिंसक युद्ध के साथ उन सभी राष्ट्रों को जोड़ना चाहते थे जो साधनहीन थे और जहाँ मात्र आर्थिक और राजनीतिक विपन्नता ही नहीं थी बल्कि दरिद्रता भी थी, जिसके कारण वे राष्ट्र भी किसी शक्तिशाली राष्ट्र के मुकावले अपनी इच्छा शक्ति और जुझारूपन के बल पर आत्मविश्वास और आत्म–निर्भरता के साथ लड़ सके।

हालांकि गाँधी ने अनेक देशी–विदेशी मतों और विचारधाराओं के आधार पर अपने अहिंसा का महल खड़ा किया। उन्होंने अहिंसा की तीन अवस्थाएँ बताई प्रथम–जाग्रत अहिंसा– यह सबसे उच्च कोटि की अहिंसा है जो जीवन के प्रत्येक क्षेत्र के लिए आवश्यक एवं उपयोगी है। द्वितीय

—''औचित्यपूर्ण अहिंसा'' यह विशेष परिस्थितियों में उचित होती है तथा असहाय व्यक्तियों के लिए उपयोगी है। इसके द्वारा किसी भी विरोधी शक्तियों का निष्क्रिय प्रतिरोध किया जा सकता है। तृतीय– भीरूओं की अहिंसा– परिस्थितियों से पलायन और जीवन की निष्क्रयता की स्थिति की अहिंसा है। गाँधी ने इसे कायरता कहकर अस्वीकार कर दिया है। उन्होंने लिखा है कि ''कायरता और अहिंसा पानी और आग की तरह एक साथ नहीं रह सकती।'' गाँधी ने अपनी अहिंसा को पूर्ण अहिंसा कहा, जो जैन दर्शन के अनेकांतवाद का ही प्रतिरूप है। गाँधी ने अपनी अहिंसा को परिभाषित करते हुए कहा था ''पूर्ण अहिंसा सभी प्राणियों के प्रति दुर्भावना के अभाव का नाम है। इस प्रकार अहिंसा अपने क्रियात्मक रूप में सभी जीवधारियों के प्रति सद्भावना का नाम है। यह तो विशुद्ध प्रेम है। अनेकान्त सिद्धान्त विभिन्न धर्म, सम्प्रदाय और देशों के बीच बंधुता, सह अस्तित्व और प्रेम का आधार हैं यह अहिंसा की चल परिणति है । भारतीय संविधान की धर्म निरपेक्षता, समता, विश्ववन्धुत्व, सामाजिक न्याय तथा पंचशील के सिद्धान्त आदि में अनेकांत दृष्टि ही कार्यरत है और यही अहिंसा गाँधी की भी अहिंसा हैं इस प्रकार गाँधी और उनकी अहिंसा ने भारतीय जीवन दर्शन को बहुत हद तक प्रभावित किया है।

गाँधी ने भारतीय जीवन के सदियों से सोये हुए दर्शन सत्य एवं अहिंसा का प्रयोग कर अंग्रेजों की गुलामी तथा सामन्तवादी व्यवस्था के बर्बरतापूर्ण समन से देश को मुक्ति दिलाई थी, उसी प्रकार आज के हिंसा, तनाव से ग्रसित आतंकपूर्ण वातावरण में गाँधी दर्शन के सत्य और अहिंसा का सहारा लेकर करूणा, मैत्री, भाईचारा एवं समानता के अलख जगानें की आवश्यकता है। आपसी प्रेम और सौहार्द बढ़ाकर ही हम समाज, राज्य तथा राष्ट्र का भला सोंच सकते हैं तथा चाहे परिवार हो या समाज और देश में शान्ति के बिना उन्नति कर ही नहीं सकता तथा शान्ति स्थापित करने का एक ही मार्ग है अहिंसा की भावना तथा देश प्रेम, राष्ट्रीयता । गाँधी जी के अनुसार ''देश का एक–एक व्यक्ति यदि अपने को सुधार ले तो देश स्वतः सुधर जायेगा। द्वेष से द्वेष तथा हिंसा से प्रतिहिंसा उत्पन होती है। मनुष्य के लिए सदैव राग और द्वेष की भावना से परे रहना असंभव है किन्तु एक दूसरे कें प्रति उदार, सम्मान स्नेह और प्रेम भाव बनाये रखना तो मुश्किल नहीं। अतः आज गाँधी की अहिंसा के अर्थ को गहराई से समझते हुए उसे प्रयोग में लाने की आवश्यकता है तब ही हमारा देश उन्नति के उज्ज्वल शिखर पर निरन्तर आगे बढ़ेंगा। हमें वर्तमान में इन बातों पर विचार करने की जरूरत है।[13] भारत की विशेषता अनेकता में एकता है जिसे मजबूत बनाने के लिए हमें गाँधी के विचारों पर मनन, चिन्तन करते हुए उसे अपने आचरण में लाना होगा।

संदर्भ संकेतः

1. संस्कृति के चार अध्याय, पृष्ठ–531, रामधारी सिंह दिनकर लोकभारती प्रकाशन, 15 ए , महात्मा गाँधी मार्ग इलाहाबाद–1988 ।
2. संस्कृति के चार अध्याय, पृष्ठ–105, रामधारी सिंह दिनकर, लोकभारतीय प्रकाशन, 15–ए, महात्मा गाँधी मार्ग, इलाहाबाद–01, 1988 ।
3. प्राचीन भारत का धार्मिक, सामाजिक और आर्थिक जीवन पृष्ठ–52, सत्यकेतु विद्यालंकार, सरस्वती सदन, नई दिल्ली। ई० 2011 ।
4. कोसल–संयुक्त के वाग्ग– 01, सुत्त– 09 ।
5. संस्कृति के चार अध्याय, पृष्ठ– 537, रामधारी सिंह दिनंकर ।
6. हिन्द स्वराज, महात्मा गाँधी, अनुवादक–अमृत लाल ठाकुर दास नानाबती, पृष्ठ–62, सर्व सेवा संघ प्रकाशन, राजघाट, वाराणसी। 1982 ।
7. गाँधी बाड्मय से संकलित, पुस्तकालय, बी०आर० अम्बेदकर बिहार विश्वविद्यालय, मुजफ्फरपुर। हिंसा और समाज परिवर्तन, ''बहुवचन'' वर्ष–3, अंक–11, अप्रैल–जून 2002, पृष्ठ– 68,
8. महात्मा गाँधी अन्तर्राष्ट्रीय हिन्दी विश्वविद्यालय बी/3/61, सफदरगंज इन्क्लेव, नई दिल्ली।
9. वही पृष्ठ– 70 ।
10. ग्राम स्वराज्य, महात्मा गाँधी, पृष्ठ–16, नवजीवन प्रकाशन मंदिर, अहजमदाबाद, 2003 ।
11. गाँधी वाड्मय
12. गाँधी ह्रदय परिवर्तन और दक्षिण अफ्रिकी, पृष्ठ– 32, गिरिराज किशोर गाँधी मार्ग वर्ष–46, अंकत–06 दिसम्बर–2001, गाँधी शान्ति प्रतिष्ठान, 221/223
13. गाँधी वाड्मय ।